اٰیَاتُهَا ۱۱۱ (۱۷) سُوۡرَةُ بَنِیۡٓ اِسۡرَآءِیۡلَ مَكِّیَّةٌ (۵۰) رُكُوۡعَاتُهَا ۱۲

उस में १११ आयतें हैं सूरह बनी इस्राईल मक्का में नाज़िल हुई और १२ रूकूअ हैं

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

سُبۡحٰنَ الَّذِیۡۤ اَسۡرٰی بِعَبۡدِهٖ لَیۡلًا مِّنَ الۡمَسۡجِدِ الۡحَرَامِ

पाक है वो ज़ात जिस ने अपने बन्दे को रात के वक्त मस्जिदे हराम से

اِلَی الۡمَسۡجِدِ الۡاَقۡصَا الَّذِیۡ بٰرَكۡنَا حَوۡلَهٗ لِنُرِیَهٗ

मस्जिदे अक़्सा तक सफर कराया, जिस के इर्द गिर्द हम ने बरकतें रखी हैं ताके हम उन्हें अपनी

مِنۡ اٰیٰتِنَا ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِیۡعُ الۡبَصِیۡرُ ۝۱ وَاٰتَیۡنَا مُوۡسَی الۡكِتٰبَ

बाज़ निशानियाँ दिखाएं। यक़ीनन वो सुनने वाला, देखने वाला है। और हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को किताब दी

وَ جَعَلۡنٰهُ هُدًی لِّبَنِیۡۤ اِسۡرَآءِیۡلَ اَلَّا تَتَّخِذُوۡا

और हम ने उसे हिदायत का ज़रिया बनाया बनी इस्राईल के लिए के तुम मुझे छोड़ कर किसी को

مِنۡ دُوۡنِیۡ وَكِیۡلًا ۝۲ ذُرِّیَّةَ مَنۡ حَمَلۡنَا مَعَ نُوۡحٍ ؕ اِنَّهٗ كَانَ

कारसाज़ मत बनाओ। हम ने तुम्हें उन की ज़ुर्रीयत बनाया है जिन को हम ने सवार कराया था नूह (अलैहिस्सलाम) के साथ। यक़ीनन वो

عَبۡدًا شَكُوۡرًا ۝۳ وَ قَضَیۡنَاۤ اِلٰی بَنِیۡۤ اِسۡرَآءِیۡلَ

शुक्रगुज़ार बन्दे थे। और हम ने बनी इस्राईल के लिए उस किताब में फ़ैसला

فِی الۡكِتٰبِ لَتُفۡسِدُنَّ فِی الۡاَرۡضِ مَرَّتَیۡنِ وَ لَتَعۡلُنَّ

कर दिया के तुम ज़मीन में ज़रूर फसाद मचाओगे दो मर्तबा और ज़रूर तुम

عُلُوًّا كَبِیۡرًا ۝۴ فَاِذَا جَآءَ وَعۡدُ اُوۡلٰىهُمَا بَعَثۡنَا عَلَیۡكُمۡ

बड़ी सरकशी करोगे। फिर जब उन में से पेहली मर्तबा का वक़्त आएगा तो हम तुम पर

عِبَادًا لَّنَاۤ اُولِیۡ بَاۡسٍ شَدِیۡدٍ فَجَاسُوۡا خِلٰلَ الدِّیَارِ ؕ

अपने सख्त जंग करने वाले बन्दों को भेजेंगे, फिर वो घरों में घुस जाएंगे।

وَكَانَ وَعۡدًا مَّفۡعُوۡلًا ۝۵ ثُمَّ رَدَدۡنَا لَكُمُ الۡكَرَّةَ عَلَیۡهِمۡ

और ये वादा बिल्कुल पूरा हो कर रहा। फिर हम तुम्हें उन पर ग़लबा देंगे

وَاَمۡدَدۡنٰكُمۡ بِاَمۡوَالٍ وَّ بَنِیۡنَ وَجَعَلۡنٰكُمۡ اَكۡثَرَ نَفِیۡرًا ۝۶

और हम तुम्हारी इमदाद करेंगे मालों और बेटों के ज़रिए और हम तुम्हें ज़्यादा लशकर देंगे।

اِنْ اَحْسَنْتُمْ اَحْسَنْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ ۙ وَاِنْ اَسَاْتُمْ فَلَهَا ؕ
अगर तुम अच्छे बनोगे तो अपने लिए अच्छे बनोगे। और अगर तुम बुरे बनोगे तो अपने लिए।

فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ الْاٰخِرَةِ لِيَسُوْٓءٗا وُجُوْهَكُمْ وَلِيَدْخُلُوا
फिर जब दूसरी मर्तबा का वक्त आएगा ताके वो तुम्हारी सूरतें बिगाड़ दें और वो मस्जिद में

الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوْهُ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّلِيُتَبِّرُوْا مَا عَلَوْا
दाखिल हो जाएं जैसा के वो उस में पेहली मर्तबा में दाखिल हुए थे और ताके वो बरबाद कर दें उन तमाम चीज़ों को

تَتْبِيْرًا ۝٧ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يَّرْحَمَكُمْ ۚ وَاِنْ عُدْتُّمْ
जिन पर वो ग़ालिब आ जाएं। हो सकता है के तुम्हारा रब तुम पर रहम करे। अगर तुम दोबारा वही करोगे

عُدْنَا ؘ وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِيْنَ حَصِيْرًا ۝٨ اِنَّ هٰذَا وقف لازم
तो हम भी दोबारा वही करेंगे। और हम ने जहन्नम काफिरों को घेरने वाली बनाई है। यक़ीनन ये

الْقُرْاٰنَ يَهْدِيْ لِلَّتِيْ هِيَ اَقْوَمُ وَ يُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِيْنَ
क़ुरआन हिदायत देता है उस रास्ते की जो ज़्यादा सीधा है और बशारत देता है ईमान वाले उन लोगों को

الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا كَبِيْرًا ۝٩
जो नेक अमल करते हैं इस बात की के उन के लिए बड़ा अज्र है।

وَّاَنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا
और ये के जो आखिरत पर ईमान नहीं लाते उन के लिए हम ने दर्दनाक अज़ाब तय्यार कर

اَلِيْمًا ۝١٠ وَ يَدْعُ الْاِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَآءَهٗ بِالْخَيْرِ ؕ ع
रखा है। और कुछ लोग खुद मसाइब की दुआ उन के भलाई मांगने की तरह करते हैं।

وَكَانَ الْاِنْسَانُ عَجُوْلًا ۝١١ وَ جَعَلْنَا الَّيْلَ وَالنَّهَارَ
और इन्सान जल्दबाज़ वाकेअ हुवा है। और हम ने रात और दिन दो निशानियाँ

اٰيَتَيْنِ فَمَحَوْنَآ اٰيَةَ الَّيْلِ وَجَعَلْنَآ اٰيَةَ النَّهَارِ مُبْصِرَةً
बनाईं, फिर हम ने रात की निशानी को तारीक बनाया और दिन की निशानी को हम ने रोशन बनाया

لِّتَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ
ताके तुम अपने रब के फ़ज़्ल (रोज़ी) को तलाश करो और ताके तुम सालों की गिनती और हिसाब को

وَالْحِسَابَ ؕ وَكُلَّ شَيْءٍ فَصَّلْنٰهُ تَفْصِيْلًا ۝١٢ وَكُلَّ
जान लो। और हर चीज़ हम ने तफसील से बयान की है। और हर

اِنْسَانٍ اَلْزَمْنٰهُ طٰٓىِٕرَهٗ فِیْ عُنُقِهٖ ؕ وَ نُخْرِجُ لَهٗ یَوْمَ

इन्सान के साथ उस के नामाए आमाल को हम उस की गर्दन में चिपका देंगे। और उस के लिए क़यामत के

الْقِیٰمَةِ كِتٰبًا یَّلْقٰىهُ مَنْشُوْرًا ﴿۱۳﴾ اِقْرَاْ كِتٰبَكَ ؕ كَفٰى

दिन लिखा हुवा निकालेंगे जिसे वो खुला हुवा पाएगा। (कहा जाएगा के) तेरा नामाए आमाल पढ़ ले। तू आज खुद

بِنَفْسِكَ الْیَوْمَ عَلَیْكَ حَسِیْبًا ﴿۱۴﴾ مَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا

ही अपना हिसाब लेने के लिए काफी है। जो हिदायत पाएगा तो वो सिर्फ

یَهْتَدِیْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا یَضِلُّ عَلَیْهَا ؕ

अपनी ज़ात के लिए हिदायत पाएगा। और जो गुमराह होगा तो सिर्फ उसी पर गुमराही का वबाल पड़ेगा।

وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ؕ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِیْنَ

और कोई गुनाह उठाने वाला दूसरे का गुनाह नहीं उठाएगा। और हम अज़ाब नहीं देते

حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا ﴿۱۵﴾ وَاِذَاۤ اَرَدْنَاۤ اَنْ نُّهْلِكَ قَرْیَةً

जब तक के हम रसूल नहीं भेज देते। और जब हम इरादा करते हैं के किसी बस्ती को हलाक करें तो हम

اَمَرْنَا مُتْرَفِیْهَا فَفَسَقُوْا فِیْهَا فَحَقَّ عَلَیْهَا الْقَوْلُ

वहाँ के खुशहाल लोगों को हुक्म देते हैं, फिर वो उस में फिस्क़ करते हैं, फिर उन पर अज़ाब का कलिमा साबित हो जाता है,

فَدَمَّرْنٰهَا تَدْمِیْرًا ﴿۱۶﴾ وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُوْنِ

फिर हम उसे तबाह कर देते हैं। और कितनी बस्तियाँ हम ने नूह (अलैहिस्सलाम) के बाद

مِنْۢ بَعْدِ نُوْحٍ ؕ وَكَفٰى بِرَبِّكَ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِیْرًۢا

तबाह व बरबाद कीं? और आप का रब अपने बन्दों के गुनाहों की ख़बर रखने वाला, देखने वाला

بَصِیْرًا ﴿۱۷﴾ مَنْ كَانَ یُرِیْدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهٗ

काफी है। जो दुन्या चाहेगा तो हम उसे दुन्या में जल्दी दे देंगे

فِیْهَا مَا نَشَآءُ لِمَنْ نُّرِیْدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهٗ جَهَنَّمَ ۚ

वो जो हम चाहेंगे, जिस के लिए चाहेंगे, फिर उस के लिए जहन्नम मुक़र्रर कर देंगे,

یَصْلٰىهَا مَذْمُوْمًا مَّدْحُوْرًا ﴿۱۸﴾ وَمَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ

जिस में वो दाखिल होगा मज़म्मत किया हुवा, धुतकारा हुवा। और जो आखिरत चाहेगा

وَ سَعٰى لَهَا سَعْیَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓىِٕكَ كَانَ سَعْیُهُمْ

और उस के लिए कोशिश करेगा वो कोशिश जो उस के लाइक़ है बशर्तेके वो मोमिन हो, तो उन की कोशिश की क़दर की

مَّشْكُوْرًا ﴿١٩﴾ كُلًّا نُّمِدُّ هٰٓؤُلَآءِ وَهٰٓؤُلَآءِ مِنْ عَطَآءِ رَبِّكَ ؕ

जाएगी। तमाम को हम इमदाद दे रहे हैं, इन को भी और उन को भी तेरे रब की अता में से।

وَمَا كَانَ عَطَآءُ رَبِّكَ مَحْظُوْرًا ﴿٢٠﴾ اُنْظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا

और तेरे रब की अता बन्द नहीं है। आप देखिए के कैसे हम में उन में से एक को दूसरे पर

بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ وَلَلْاٰخِرَةُ اَكْبَرُ دَرَجٰتٍ وَّاَكْبَرُ

फ़ज़ीलत दी है। और यक़ीनन आखिरत दरजात के ऐतेबार से ज़्यादा बड़ी है और फ़ज़ीलत में भी

تَفْضِيْلًا ﴿٢١﴾ لَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُوْمًا

बढ़ी हुई है। तुम अल्लाह के साथ कोई दूसरा माबूद मत बनाओ, वरना तुम बैठे रहोगे मज़म्मत किए हुए,

مَّخْذُوْلًا ﴿٢٢﴾ وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ ع ٢

बेकसी की हालत में। तेरे रब ने हुक्म दिया है के इबादत मत करो मगर उसी की और वालिदैन के साथ

اِحْسَانًا ؕ اِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَآ اَوْ كِلٰهُمَا

हुस्ने सुलूक का हुक्म दिया है। अगर तेरे सामने उन में से कोई एक या दोनों बुढ़ापे को पहोंच जाएं

فَلَا تَقُلْ لَّهُمَآ اُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَّهُمَا قَوْلًا

तो उन से उफ भी मत कहो और उन को मत झिड़को, बल्के उन से ताज़ीम वाले लेहजे में

كَرِيْمًا ﴿٢٣﴾ وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ

बात करो। और उन के सामने नरमी से आजिज़ी के साथ कन्धे झुकाए रखो

وَقُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا ﴿٢٤﴾ ؕ رَبُّكُمْ اَعْلَمُ

और यूं कहो ऐ मेरे रब! तू उन दोनों पर रहम फरमा जैसा के उन्हों ने मेरी बचपन में परवरिश की। तुम्हारा रब खूब

بِمَا فِيْ نُفُوْسِكُمْ ؕ اِنْ تَكُوْنُوْا صٰلِحِيْنَ فَاِنَّهٗ كَانَ

जानता है उसे जो तुम्हारे दिलों में है। अगर तुम नेक रहोगे तो यक़ीनन वो

لِلْاَوَّابِيْنَ غَفُوْرًا ﴿٢٥﴾ وَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ

तौबा करने वालों की बखशिश करने वाला है। और रिश्तेदार को उस का हक़ दो और मिस्कीन

وَابْنَ السَّبِيْلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيْرًا ﴿٢٦﴾ اِنَّ الْمُبَذِّرِيْنَ

और मुसाफ़िर को और फ़ुजूलखर्ची मत करो। इस लिए के फ़ुजूलखर्च

كَانُوْٓا اِخْوَانَ الشَّيٰطِيْنِ ؕ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِرَبِّهٖ كَفُوْرًا ﴿٢٧﴾

शैतान के भाई हैं। और शैतान उपने रब का नाशुकरा है।

وَاِمَّا تُعْرِضَنَّ عَنْهُمُ ابْتِغَآءَ رَحْمَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ تَرْجُوْهَا
और अगर तू उन से ऐराज़ करे अपने रब की रहमत तलब करने के लिए जिस की तू उम्मीद रखता है

فَقُلْ لَّهُمْ قَوْلًا مَّيْسُوْرًا ﴿٢٨﴾ وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُوْلَةً
तब भी उन से नर्म बात केह। और तू अपना हाथ गर्दन से बन्धा हुवा

اِلٰى عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُوْمًا
मत रख और न उसे पूरे तौर पर खोल दे, वरना तू मलामत किया हुवा, हार कर बैठा

مَّحْسُوْرًا ﴿٢٩﴾ اِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ؕ
रहेगा। यक़ीनन तेरा रब रोज़ी कुशादा करता है जिस के लिए चाहता है और तंग करता है (जिस के लिए चाहता

ع ٣/٤ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًاۢ بَصِيْرًا ﴿٣٠﴾ وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَوْلَادَكُمْ
है)। यक़ीनन वो अपने बन्दों की खबर रखने वाला, देखने वाला है। और अपनी औलाद को फक़्र के खौफ

خَشْيَةَ اِمْلَاقٍ ؕ نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَاِيَّاكُمْ ؕ اِنَّ قَتْلَهُمْ
से क़त्ल मत करो। हम उन्हें भी रोज़ी देंगे और तुम्हें भी। यक़ीनन उन का क़त्ल

كَانَ خِطْاً كَبِيْرًا ﴿٣١﴾ وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰٓى اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً ؕ
बहोत बड़ा गुनाह है। और ज़िना के क़रीब मत जाओ, यक़ीनन वो बेहयाई है।

وَسَآءَ سَبِيْلًا ﴿٣٢﴾ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ
और बुरा रास्ता है। और उस जान को क़त्ल मत करो जिस को अल्लाह ने हराम क़रार दिया

اِلَّا بِالْحَقِّ ؕ وَمَنْ قُتِلَ مَظْلُوْمًا فَقَدْ جَعَلْنَا لِوَلِيِّهٖ
मगर हक़ की वजह से। और जिसे मज़लूम क़त्ल किया जाए तो हम ने उस के वारिस को इखतियार

سُلْطٰنًا فَلَا يُسْرِفْ فِّي الْقَتْلِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ مَنْصُوْرًا ﴿٣٣﴾
दिया है, इस लिए वो क़त्ल में ज़्यादती न करे। इस लिए के उस की नुसरत की गई है।

وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ
और यतीम के माल के क़रीब मत जाओ मगर उस तरीक़े से जो बेहतर हो,

حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۪ وَاَوْفُوْا بِالْعَهْدِ ۚ اِنَّ الْعَهْدَ كَانَ
यहां तक के वो अपनी जवानी को पहोंच जाए। और अहद पूरा करो। इस लिए के अहद का भी सवाल

مَسْـُٔوْلًا ﴿٣٤﴾ وَاَوْفُوا الْكَيْلَ اِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ
किया जाएगा। और पैमाना भर भर कर दो जब नापो और सीधी तराज़ू से

الْمُسْتَقِيْمِ ؕ ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّ اَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ﴿۳۵﴾ وَلَا تَقْفُ

वज़न करो। ये बेहतर है और अन्जाम के ऐतेबार से अच्छा है। और उस के पीछे

مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ؕ اِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ

मत पड़ जिस का तुझे इल्म नहीं। इस लिए के कान और आँखें और दिल

كُلُّ اُولٰٓئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُوْلًا ﴿۳۶﴾ وَلَا تَمْشِ

उन तमाम के मुतअल्लिक़ सवाल किया जाएगा। और तू ज़मीन में अकड़ता

فِى الْاَرْضِ مَرَحًا ۚ اِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْاَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ

हुवा मत चल। इस लिए के तू ज़मीन को हरगिज़ फाड़ नहीं सकता और लम्बा हो कर पहाड़ों

الْجِبَالَ طُوْلًا ﴿۳۷﴾ كُلُّ ذٰلِكَ كَانَ سَيِّئُهٗ عِنْدَ رَبِّكَ

(की बराबरी) को हरगिज़ नहीं पहोंच सकता। ये सब बुरे खसाइल तेरे रब के नज़दीक

مَكْرُوْهًا ﴿۳۸﴾ ذٰلِكَ مِمَّآ اَوْحٰٓى اِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ ؕ

नापसन्द हैं। ये हिक्मत की उन बातों में से है जिन की आप के रब ने आप की तरफ़ वही की है।

وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتُلْقٰى فِىْ جَهَنَّمَ مَلُوْمًا

और तू अल्लाह के साथ दूसरे माबूद मत क़रार दे, वरना जहन्नम में मलामत किया हुवा धुतकारा हुवा

مَّدْحُوْرًا ﴿۳۹﴾ اَفَاَصْفٰىكُمْ رَبُّكُمْ بِالْبَنِيْنَ وَاتَّخَذَ

डाल दिया जाएगा। क्या तुम्हारे रब ने तुम्हें बेटे चुन कर दिए और खुद उस ने

مِنَ الْمَلٰٓئِكَةِ اِنَاثًا ؕ اِنَّكُمْ لَتَقُوْلُوْنَ قَوْلًا عَظِيْمًا ﴿۴۰﴾ وَلَقَدْ ع ۱۰

फ़रिशतों में से बेटियाँ लीं? यक़ीनन तुम बड़ी भारी बात केहते हो। यक़ीनन हम ने इस

صَرَّفْنَا فِىْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِيَذَّكَّرُوْا ؕ وَمَا يَزِيْدُهُمْ

कुरआन में फेर फेर कर बयान किया ताके वो नसीहत हासिल करें। और ये कुरआन उन को नहीं बढ़ाता

اِلَّا نُفُوْرًا ﴿۴۱﴾ قُلْ لَّوْ كَانَ مَعَهٗٓ اٰلِهَةٌ كَمَا يَقُوْلُوْنَ

मगर नफरत में। आप पूछिए के अगर अल्लाह के साथ और माबूद भी होते जैसा के वो केहते हैं, तब

اِذًا لَّابْتَغَوْا اِلٰى ذِى الْعَرْشِ سَبِيْلًا ﴿۴۲﴾ سُبْحٰنَهٗ وَ تَعٰلٰى

तो वो सब के सब अर्श वाले माबूद की तरफ रास्ता तलाश करते। अल्लाह पाक है और बरतर है

عَمَّا يَقُوْلُوْنَ عُلُوًّا كَبِيْرًا ﴿۴۳﴾ تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ

उन बातों से जो वो केहते हैं, बहोत ज़्यादा बरतर है। उस के लिए तो सातों आसमान और ज़मीन और वो

السَّبْعُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ ؕ وَاِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا يُسَبِّحُ

तमाम चीज़ें जो उन में हैं, वो तस्बीह करती हैं। और कोई चीज़ नहीं है मगर वो अल्लाह की हम्द के साथ

بِحَمْدِهٖ وَلٰكِنْ لَّا تَفْقَهُوْنَ تَسْبِيْحَهُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ

तस्बीह करती है, लेकिन तुम उस की तस्बीह समझते नहीं हो। यक़ीनन अल्लाह

حَلِيْمًا غَفُوْرًا ﴿٤٤﴾ وَاِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ

हिल्म वाला, बख़्शने वाला है। और जब आप क़ुरआन पढ़ते हो तो हम आप के दरमियान

وَ بَيْنَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ حِجَابًا مَّسْتُوْرًا ۙ﴿٤٥﴾

और उन लोगों के दरमियान जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते एक पोशीदा पर्दा रख देते हैं।

وَّجَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ

और हम ने उन के दिलों पर पर्दे रख दिए हैं इस से के वो क़ुरआन को समझें और उन के कानों में डाट

وَقْرًا ؕ وَاِذَا ذَكَرْتَ رَبَّكَ فِي الْقُرْاٰنِ وَحْدَهٗ وَلَّوْا عَلٰٓى

रख दी है। और जब आप अपने रब का तन्हा क़ुरआन में ज़िक्र करते हो तो वो अपनी पीठ फेर कर नफ़रत

اَدْبَارِهِمْ نُفُوْرًا ﴿٤٦﴾ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمِعُوْنَ بِهٖٓ

करते हुए भागते हैं। हम ख़ूब जानते हैं उस ग़र्ज़ को जिस के लिए वो कान लगा कर सुनते हैं

اِذْ يَسْتَمِعُوْنَ اِلَيْكَ وَاِذْ هُمْ نَجْوٰٓى اِذْ يَقُوْلُ الظّٰلِمُوْنَ

जब के वो आप की तरफ कान लगाते हैं और जब के वो सरगोशी करते हैं, जब के ज़ालिम लोग केहते हैं के

اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ﴿٤٧﴾ اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا

तुम तो पीछे नहीं चलते मगर ऐसे शख़्स के जिस पर जादू कर दिया गया है। आप देखिए के वो आप के लिए

لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ﴿٤٨﴾ ع

कैसी मिसालें बयान करते हैं, फिर वो रास्ते से भटक गए हैं, फिर रास्ते की ताक़त नहीं रखते।

وَ قَالُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ

और वो केहते हैं के क्या जब हम हड्डियाँ हो जाएंगे और रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे तब हम अज़ सरे नौ

خَلْقًا جَدِيْدًا ﴿٤٩﴾ قُلْ كُوْنُوْا حِجَارَةً اَوْ حَدِيْدًا ۙ﴿٥٠﴾

ज़िन्दा किए जाएंगे? आप फरमा दीजिए के तुम पत्थर बन जाओ या लोहा बन जाओ। या कोई मख़लूक़ बन जाओ

اَوْ خَلْقًا مِّمَّا يَكْبُرُ فِيْ صُدُوْرِكُمْ ۚ فَسَيَقُوْلُوْنَ مَنْ يُّعِيْدُنَا ؕ

उस में से जिस को तुम अपने दिलों में बड़ा समझते हो। फिर भी अनक़रीब ये लोग कहेंगे के हमें दोबारा कौन

قُلِ الَّذِیْ فَطَرَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ فَسَیُنْغِضُوْنَ اِلَیْكَ

पैदा करेगा? आप फरमा दीजिए के वही अल्लाह जिस ने तुम्हें पेहली मर्तबा में पैदा किया। तो वो अनक़रीब

رُءُوْسَهُمْ وَ یَقُوْلُوْنَ مَتٰی هُوَ ؕ قُلْ عَسٰۤی اَنْ یَّكُوْنَ

आप के सामने अपने सर हिलाएंगे और कहेंगे के वो कब है? आप फरमा दीजिए के हो सकता है के वो

قَرِیْبًا ۝۵۱ یَوْمَ یَدْعُوْكُمْ فَتَسْتَجِیْبُوْنَ بِحَمْدِهٖ وَ تَظُنُّوْنَ

क़रीब ही हो। जिस दिन वो तुम्हें पुकारेगा तो तुम अल्लाह की हम्द के साथ पुकार को क़बूल कर लोगे और तुम गुमान

اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِیْلًا ۝۵۲ وَ قُلْ لِّعِبَادِیْ یَقُوْلُوا الَّتِیْ ع ۵

करोगे के तुम (क़ब्र में) नहीं ठेहरे मगर बहोत थोड़ा। और मेरे बन्दों से केह दीजिए के वो कहें वो बात जो

هِیَ اَحْسَنُ ؕ اِنَّ الشَّیْطٰنَ یَنْزَغُ بَیْنَهُمْ ؕ اِنَّ الشَّیْطٰنَ

अच्छी हो। यक़ीनन शैतान उन के दरमियान झगड़ा डालता है। यक़ीनन शैतान

كَانَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوًّا مُّبِیْنًا ۝۵۳ رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِكُمْ ؕ

इन्सान का खुला दुशमन है। तुम्हारा रब तुम्हें खूब जानता है।

اِنْ یَّشَاْ یَرْحَمْكُمْ اَوْ اِنْ یَّشَاْ یُعَذِّبْكُمْ ؕ وَ مَاۤ اَرْسَلْنٰكَ

अगर वो चाहे तो तुम पर रहम करे या अगर चाहे तो तुम्हें अज़ाब दे। और हम ने आप को उन पर निगरां

عَلَیْهِمْ وَكِیْلًا ۝۵۴ وَ رَبُّكَ اَعْلَمُ بِمَنْ فِی السَّمٰوٰتِ

बना कर नहीं भेजा। और आप का रब खूब जानता है उन को जो आसमानों में हैं

وَ الْاَرْضِ ؕ وَ لَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِیّٖنَ عَلٰی بَعْضٍ

और जो ज़मीन में हैं। यक़ीनन हम ने अम्बिया में से बाज़ को बाज़ पर फज़ीलत दी और हम ने

وَّ اٰتَیْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا ۝۵۵ قُلِ ادْعُوا الَّذِیْنَ زَعَمْتُمْ

दावूद (अलैहिस्सलाम) को ज़बूर दी। आप फरमा दीजिए के तुम पुकारो उन को जिन को तुम अल्लाह के सिवा (माबूद)

مِّنْ دُوْنِهٖ فَلَا یَمْلِكُوْنَ كَشْفَ الضُّرِّ عَنْكُمْ وَ لَا تَحْوِیْلًا ۝۵۶

समझते हो, फिर वो तुम से ज़रर दूर करने के मालिक नहीं हैं और न ज़रर तबदील करने के मालिक हैं।

اُولٰٓئِكَ الَّذِیْنَ یَدْعُوْنَ یَبْتَغُوْنَ اِلٰی رَبِّهِمُ

जिन को पुकारते हैं ये कुफ्फार वो खुद अपने रब की तरफ वसीला तलाश करते हैं

الْوَسِیْلَةَ اَیُّهُمْ اَقْرَبُ وَ یَرْجُوْنَ رَحْمَتَهٗ وَ یَخَافُوْنَ

के उन में कौन ज़्यादा मुक़र्रब है और वो उस की रहमत के उम्मीदवार हैं और उस के अज़ाब से

عَذَابَهٗ ؕ اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُوْرًا ﴿۵۷﴾ وَاِنْ مِّنْ قَرْيَةٍ

डरते हैं। यक़ीनन तेरे रब का अज़ाब डरने की चीज़ है। और कोई बस्ती नहीं

اِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوْهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ اَوْ مُعَذِّبُوْهَا

मगर हम उस को क़यामत के दिन से पेहले हलाक करने वाले हैं या उसे हम सख्त अज़ाब

عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ كَانَ ذٰلِكَ فِى الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا ﴿۵۸﴾

देने वाले हैं। ये किताब में लिखा हुवा है।

وَمَا مَنَعَنَاۤ اَنْ نُّرْسِلَ بِالْاٰيٰتِ اِلَّاۤ اَنْ كَذَّبَ بِهَا

और हमें मानेअ नहीं हुवा इस से के हम मोअजिज़ात भेजें मगर ये के उस को पेहलों ने

الْاَوَّلُوْنَ ؕ وَاٰتَيْنَا ثَمُوْدَ النَّاقَةَ مُبْصِرَةً فَظَلَمُوْا بِهَا ؕ

झुठलाया। और हम ने क़ौमे समूद को नाक़ा (ऊँटनी) दी जो रोशन मोअजिज़ा थी, फिर भी उन्हों ने उस के साथ ज़ुल्म

وَمَا نُرْسِلُ بِالْاٰيٰتِ اِلَّا تَخْوِيْفًا ﴿۵۹﴾ وَاِذْ قُلْنَا لَكَ

किया। और हम मोअजिज़ात नहीं भेजते मगर डराने के लिए। और जब हम आप से केहते हैं के यक़ीनन आप के

اِنَّ رَبَّكَ اَحَاطَ بِالنَّاسِ ؕ وَمَا جَعَلْنَا الرُّءْيَا الَّتِىْۤ اَرَيْنٰكَ

रब ने उन लोगों का इहाता कर रखा है। और बेदारी में जो मन्ज़र आप को हम ने दिखाया, उसे हम ने नहीं बनाया

اِلَّا فِتْنَةً لِّلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ الْمَلْعُوْنَةَ فِى الْقُرْاٰنِ ؕ

मगर उन लोगों के लिए फ़ितना (इम्तिहान) और उस दरख्त को भी जिस पर क़ुरआन में लानत की गई है।

وَنُخَوِّفُهُمْ ۙ فَمَا يَزِيْدُهُمْ اِلَّا طُغْيَانًا كَبِيْرًا ﴿۶۰﴾ وَاِذْ قُلْنَا ع ۶

और हम उन्हें डराते हैं, फिर ये उन को नहीं बढ़ाता मगर बड़ी सरकशी में। और जब हम ने फ़रिशतों से

لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْۤا اِلَّاۤ اِبْلِيْسَ ؕ قَالَ

कहा के आदम (अलैहिस्सलाम) को सज्दा करो, तो सिवाए इबलीस के उन तमाम ने सज्दा किया। इबलीस ने कहा

ءَاَسْجُدُ لِمَنْ خَلَقْتَ طِيْنًا ﴿۶۱﴾ قَالَ اَرَءَيْتَكَ هٰذَا الَّذِىْ

क्या मैं सज्दा करूँ उस को जिसे आप ने मिट्टी से बनाया है? इबलीस ने कहा भला देख! ये इन्सान जिसे

كَرَّمْتَ عَلَىَّ ۫ لَئِنْ اَخَّرْتَنِ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَاَحْتَنِكَنَّ

तू ने मुझ से बढ़ा दिया। अगर तू मुझे क़यामत के दिन तक मोहलत दे तो मैं उस की औलाद

ذُرِّيَّتَهٗۤ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۶۲﴾ قَالَ اذْهَبْ فَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ

को गुमराह कर दूँ सिवाए चन्द लोगों के। अल्लाह ने फ़रमाया के तू जा! फिर जो उन में से तेरे पीछे चलेगा

فَاِنَّ جَهَنَّمَ جَزَآؤُكُمْ جَزَآءً مَّوْفُوْرًا ﴿٦٣﴾ وَاسْتَفْزِزْ مَنِ

तो जहन्नम तुम्हारी पूरी पूरी सज़ा है। और तू डरा उन में से

اسْتَطَعْتَ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ وَاَجْلِبْ عَلَيْهِمْ بِخَيْلِكَ

जिस पर तू ताक़त रख सके तेरी आवाज़ के ज़रिए और तू उन पर खींच कर ला तेरी सवार फौज को

وَرَجِلِكَ وَشَارِكْهُمْ فِى الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ وَعِدْهُمْ ؕ

और तेरी प्यादा फौज को और तू उन के साथ शरीक हो जा मालों में और औलाद में और तू उन को वादा दिला।

وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿٦٤﴾ اِنَّ عِبَادِىْ لَيْسَ لَكَ

और शैतान उन को वादा नहीं दिलाता मगर धोके का। अल्बत्ता मेरे बन्दों पर तेरा कोई

عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ ؕ وَكَفٰى بِرَبِّكَ وَكِيْلًا ﴿٦٥﴾ رَبُّكُمُ الَّذِىْ يُزْجِىْ

बस नहीं चलेगा। और तेरा रब काफी कारसाज़ है। तुम्हारा रब वो है जो तुम्हारे लिए कशती को

لَكُمُ الْفُلْكَ فِى الْبَحْرِ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّهٗ كَانَ

तेज़ चलाता है समन्दर में ताके तुम उस के फ़ज़्ल को तलाश करो। यक़ीनन वो

بِكُمْ رَحِيْمًا ﴿٦٦﴾ وَاِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِى الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ

तुम्हारे साथ मेहरबान है। और जब तुम्हें ज़रर पहोंचता है समन्दर में तो खो जाते हैं वो जिन को

تَدْعُوْنَ اِلَّآ اِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىكُمْ اِلَى الْبَرِّ اَعْرَضْتُمْ ؕ

तुम पुकारते हो सिवाए अल्लाह के। फिर जब वो तुम्हें बचा कर ले आता है खुश्की तक तो तुम ऐराज़ करते हो।

وَكَانَ الْاِنْسَانُ كَفُوْرًا ﴿٦٧﴾ اَفَاَمِنْتُمْ اَنْ يَّخْسِفَ بِكُمْ جَانِبَ

और इन्सान बहोत नाशुकरा है। क्या तुम मामून हो गए इस से के वो तुम्हारे साथ खुश्की के किनारे को ज़मीन

الْبَرِّ اَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ

में धंसा दे या तुम्हारे ऊपर तेज़ हवा को छोड़ दे? फिर तुम अपने लिए कोई कारसाज़ भी

وَكِيْلًا ﴿٦٨﴾ اَمْ اَمِنْتُمْ اَنْ يُّعِيْدَكُمْ فِيْهِ تَارَةً اُخْرٰى

न पाओ। या तुम मामून हो गए इस से के वो तुम्हें दूसरी मर्तबा उस में लौटा दे,

فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِّنَ الرِّيْحِ فَيُغْرِقَكُمْ بِمَا كَفَرْتُمْ ۙ

फिर तुम पर तूफानी हवा छोड़ दे, फिर वो तुम्हें ग़र्क कर दे तुम्हारी नाशुकरी की वजह से।

ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ عَلَيْنَا بِهٖ تَبِيْعًا ﴿٦٩﴾ وَلَقَدْ كَرَّمْنَا

फिर तुम अपने लिए उस पर कोई हमारा पीछा करने वाला भी न पाओ? यक़ीनन हम ने

بَنِيْٓ اٰدَمَ وَ حَمَلْنٰهُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنٰهُمْ

इन्सान को इज़्ज़त दी और हम ने उन्हें सवारी दी खुश्की और समन्दर में और हम ने उन्हें रोज़ी दी

مِّنَ الطَّيِّبٰتِ وَ فَضَّلْنٰهُمْ عَلٰى كَثِيْرٍ مِّمَّنْ خَلَقْنَا

उम्दा चीज़ों की और हम ने उन्हें अपनी मखलूक़ में से बहोत सी मखलूक़ पर

ع ٧

تَفْضِيْلًا ﴿٧٠﴾ يَوْمَ نَدْعُوْا كُلَّ اُنَاسٍۢ بِاِمَامِهِمْ ۚ فَمَنْ

फज़ीलत दी। जिस दिन हम तमाम इन्सानों को उन के पेशवा के साथ बुलाएंगे। फिर जिस का

اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ فَاُولٰٓئِكَ يَقْرَءُوْنَ كِتٰبَهُمْ

नामाए आमाल उस के दाएं हाथ में दिया जाएगा तो वो अपना आमालनामा पढ़ेंगे और उन पर खजूर

وَلَا يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ﴿٧١﴾ وَمَنْ كَانَ فِيْ هٰذِهٖٓ اَعْمٰى فَهُوَ

की गुठली के तागे के बराबर भी ज़ुल्म नहीं किया जाएगा। और जो इस दुन्या में अन्धा होगा तो वो आखिरत

فِي الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى وَاَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿٧٢﴾ وَاِنْ كَادُوْا لَيَفْتِنُوْنَكَ

में भी अन्धा होगा और ज़्यादा रास्ता भटका हुवा होगा। और यक़ीनन वो क़रीब थे के आप को फ़ितने में मुबतला

عَنِ الَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ لِتَفْتَرِيَ عَلَيْنَا غَيْرَهٗ ۖۗ

कर दें उस कुरआन की तरफ से जिसे हम ने आप की तरफ़ वही की ताके उस के अलावा को आप हम पर घड़ लें।

وَاِذًا لَّاتَّخَذُوْكَ خَلِيْلًا ﴿٧٣﴾ وَلَوْلَآ اَنْ ثَبَّتْنٰكَ لَقَدْ كِدْتَّ

और तब तो वो आप को दोस्त बना लेते। और अगर ये बात न होती के हम ने आप को साबितक़दम रखा है तो यक़ीनन आप

تَرْكَنُ اِلَيْهِمْ شَيْـًٔا قَلِيْلًا ﴿٧٤﴾ اِذًا لَّاَذَقْنٰكَ ضِعْفَ

उन की तरफ थोड़ा सा माइल हो जाते। तब तो हम आप को दुन्यवी ज़िन्दगी में दुगना अज़ाब चखाते

الْحَيٰوةِ وَضِعْفَ الْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ عَلَيْنَا نَصِيْرًا ﴿٧٥﴾

और मरने के बाद का दुगना अज़ाब चखाते, फिर आप अपने लिए हमारे खिलाफ़ कोई मददगार भी न पाते।

وَاِنْ كَادُوْا لَيَسْتَفِزُّوْنَكَ مِنَ الْاَرْضِ لِيُخْرِجُوْكَ

और यक़ीनन ये क़रीब थे के आप को डरा घबरा कर निकाल दें उस सरज़मीन

مِنْهَا وَاِذًا لَّا يَلْبَثُوْنَ خِلٰفَكَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٧٦﴾ سُنَّةَ

से और तब तो वो आप के पीछे न ठेहेर पाते मगर थोड़ा। यही दस्तूर उन का

مَنْ قَدْ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنْ رُّسُلِنَا وَلَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا

भी रहा जिन को हम ने आप से पेहले रसूल बना कर भेजा और आप हमारे दस्तूर में तबदीली

تَحْوِيْلًا ﴿٧٨﴾ اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِدُلُوْكِ الشَّمْسِ اِلٰى غَسَقِ الَّيْلِ ع ٨

नहीं पाएंगे। आप नमाज़ क़ाइम कीजिए सूरज ढलने के वक्त से ले कर रात की तारीकी तक

وَقُرْاٰنَ الْفَجْرِ ؕ اِنَّ قُرْاٰنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُوْدًا ﴿٧٩﴾

और फज्र में कुरआन पढ़ने को क़ाइम कीजिए। यक़ीनन फ़ज्र की क़िराअत में फ़रिशतों की हाज़िरी होती है।

وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ ۖ۟ عَسٰٓى اَنْ يَّبْعَثَكَ

और रात के किसी वक्त में तहज्जुद पढ़िए, ये आप के लिए ज़ाइद है। हो सकता है के आप को

رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا ﴿٧٩﴾ وَقُلْ رَّبِّ اَدْخِلْنِيْ مُدْخَلَ

आप का रब मक़ामे महमूद में पहोंचाए। और आप यूँ कहिए के ऐ मेरे रब! तू मुझे दाखिल कर सच्चा

صِدْقٍ وَّاَخْرِجْنِيْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّاجْعَلْ لِّيْ

दाखिल करना और मुझे निकाल सच्चा निकालना और तू मेरे लिए अपनी तरफ

مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِيْرًا ﴿٨٠﴾ وَقُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ

से मददगार कुव्वत अता फरमा। और आप कहिए के हक़ आ गया और बातिल

الْبَاطِلُ ؕ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا ﴿٨١﴾ وَنُنَزِّلُ

मिट गया। यक़ीनन बातिल मिटने ही वाला था। और हम कुरआन में से

مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّ رَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ وَلَا يَزِيْدُ

वो उतारते हैं जो ईमान वालों के लिए शिफा है और रहमत है। और ये ज़ालिमों को

الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا خَسَارًا ﴿٨٢﴾ وَاِذَآ اَنْعَمْنَا عَلَى الْاِنْسَانِ

नहीं बढ़ाता मगर खसारे में। और जब हम इन्सान पर इन्आम करते हैं तो वो

اَعْرَضَ وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ ۚ وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يَـُٔوْسًا ﴿٨٣﴾

ऐराज़ करता है और अपना पेहलू दूर हटाता है। और जब उसे तकलीफ पहोंचती है तो मायूस हो जाता है।

قُلْ كُلٌّ يَّعْمَلُ عَلٰى شَاكِلَتِهٖ ؕ فَرَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَنْ

आप फरमा दीजिए के सब के सब अमल अपने तरीक़े पर कर रहे हैं। फिर आप का रब खूब जानता है उसे

هُوَ اَهْدٰى سَبِيْلًا ﴿٨٤﴾ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الرُّوْحِ ؕ قُلِ ع ٩

जो ज़्यादा सीधे रास्ते वाला है। और ये आप से रूह के मुतअल्लिक़ पूछते हैं। आप फरमा दीजिए के

الرُّوْحُ مِنْ اَمْرِ رَبِّيْ وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنَ الْعِلْمِ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٨٥﴾

रूह मेरे रब के हुक्म से है। और तुम्हें इल्म नहीं दिया गया मगर थोड़ा सा।

وَلَئِنْ شِئْنَا لَنَذْهَبَنَّ بِالَّذِیْٓ اَوْحَیْنَآ اِلَیْكَ ثُمَّ

और अगर हम चाहें तो सल्ब कर लें जो हम ने आप की तरफ वही की है, फिर आप अपने लिए

لَا تَجِدُ لَكَ بِهٖ عَلَیْنَا وَكِیْلًا ﴿٨٦﴾ اِلَّا رَحْمَةً

उस के (वापस लाने के) लिए हमारे खिलाफ कोई कारसाज़ भी न पाओ। मगर आप के रब की रहमत

مِّنْ رَّبِّكَ ؕ اِنَّ فَضْلَهٗ كَانَ عَلَیْكَ كَبِیْرًا ﴿٨٧﴾ قُلْ

की वजह से (सल्ब नहीं किया)। यक़ीनन उस का फ़ज़्ल आप पर बहोत ज़्यादा है। आप फरमा दीजिए के

لَّئِنِ اجْتَمَعَتِ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلٰٓی اَنْ یَّاْتُوْا بِمِثْلِ هٰذَا

अगर तमाम इन्सान और जिन्नात जमा हो जाएं इस पर के इस जैसा कुरआन

الْقُرْاٰنِ لَا یَاْتُوْنَ بِمِثْلِهٖ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ

ले आएं, तब भी इस जैसा कुरआन नहीं ला सकते अगर्चे उन में से एक दूसरे के मददगार

ظَهِیْرًا ﴿٨٨﴾ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِیْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ

बन जाएं। यक़ीनन हम ने इन्सानों के लिए इस कुरआन में हर मिसाल को

مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ۫ فَاَبٰٓی اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ﴿٨٩﴾

फेर फेर कर बयान किया। फिर भी इन्सानों की अकसरीयत ने इन्कार किया, मगर कुफ़्र में (बढ़ते गए)।

وَقَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰی تَفْجُرَ لَنَا مِنَ الْاَرْضِ

और कहा के हम हरगिज़ आप पर ईमान नहीं लाएंगे यहां तक के आप हमारे लिए इस ज़मीन में चशमा

یَنْۢبُوْعًا ﴿٩٠﴾ اَوْ تَكُوْنَ لَكَ جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِیْلٍ وَّعِنَبٍ

जारी कर दें। या आप के लिए खजूर और अंगूर का बाग़ हो,

فَتُفَجِّرَ الْاَنْهٰرَ خِلٰلَهَا تَفْجِیْرًا ﴿٩١﴾ اَوْ تُسْقِطَ السَّمَآءَ

फिर उस के दरमियान में आप नेहरें जारी कर दें। या आप आसमान हम पर टुकड़े कर के गिरा दें

كَمَا زَعَمْتَ عَلَیْنَا كِسَفًا اَوْ تَاْتِیَ بِاللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ

जैसा के आप दावा करते हैं या अल्लाह और फरिशतों को आमने सामने

قَبِیْلًا ﴿٩٢﴾ اَوْ یَكُوْنَ لَكَ بَیْتٌ مِّنْ زُخْرُفٍ اَوْ تَرْقٰی

ले आएं। या आप के लिए सौने का मकान हो या आप आसमान में

فِی السَّمَآءِ ؕ وَلَنْ نُّؤْمِنَ لِرُقِیِّكَ حَتّٰی تُنَزِّلَ عَلَیْنَا

चढ़ जाएं, और हम आप के चढ़ने को भी हरगिज़ नहीं मानेंगे यहां तक के आप हम पर किताब उतार कर

كِتٰبًا نَّقْرَؤُهٗ ؕ قُلْ سُبْحَانَ رَبِّیْ هَلْ كُنْتُ اِلَّا بَشَرًا

ले आएं जिस को हम पढ़ भी लें। आप फरमा दीजिए के "سُبْحَانَ اللّٰهِ" (मेरा रब पाक है), मैं तो नहीं हूँ मगर

رَّسُوْلًا ﴿۹۳﴾ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ یُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَآءَهُمُ ع

एक भेजा हुवा इन्सान। और इन्सानों को ईमान लाने से मानेअ नहीं हुई जब उन के पास हिदायत

الْهُدٰٓی اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَبَعَثَ اللّٰهُ بَشَرًا رَّسُوْلًا ﴿۹۴﴾ قُلْ

आई मगर ये बात के उन्हों ने कहा क्या अल्लाह ने एक बशर को रसूल बना कर भेजा? आप फ़रमा दीजिए

لَّوْ كَانَ فِی الْاَرْضِ مَلٰٓئِكَةٌ یَّمْشُوْنَ مُطْمَئِنِّیْنَ

के अगर ज़मीन में फरिशते चलते होते इतमिनान से

لَنَزَّلْنَا عَلَیْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَلَكًا رَّسُوْلًا ﴿۹۵﴾ قُلْ كَفٰی

तो हम उन पर आसमान से फरिशता रसूल बना कर उतारते। आप फरमा दीजिए के

بِاللّٰهِ شَهِیْدًا ۢ بَیْنِیْ وَ بَیْنَكُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ

अल्लाह मेरे और तुम्हारे दरमियान काफी गवाह है। यक़ीनन वो अपने बन्दों की

خَبِیْرًا ۢ بَصِیْرًا ﴿۹۶﴾ وَمَنْ یَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ

खबर रखने वाला, देखने वाला है। और जिस को अल्लाह हिदायत दे वो हिदायतयाफता है। और जिसे अल्लाह

یُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ اَوْلِیَآءَ مِنْ دُوْنِهٖ ؕ وَنَحْشُرُهُمْ

गुमराह कर दे तो आप उन के लिए अल्लाह के अलावा कोई हिमायती हरगिज़ नहीं पाएंगे। और हम उन्हें क़यामत के

یَوْمَ الْقِیٰمَةِ عَلٰی وُجُوْهِهِمْ عُمْیًا وَّبُكْمًا وَّصُمًّا ؕ مَاْوٰىهُمْ

दिन उन के चेहरों के बल चला कर अन्धा, गूंगा और बेहरा होने की हालत में इकट्ठा करेंगे। उन का ठिकाना

جَهَنَّمُ ؕ كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنٰهُمْ سَعِیْرًا ﴿۹۷﴾ ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ النصف

जहन्नम है। जो अगर ज़रा ठंडी होगी हम उसे उन के लिए और ज़्यादा भड़काएंगे। ये उन की सज़ा है इस वजह से

بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاٰیٰتِنَا وَ قَالُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا

के उन्हों ने कुफ्र किया हमारी आयतों के साथ और उन्हों ने कहा के क्या जब हम हड्डियाँ हो जाएंगे और रेज़ा रेज़ा हो

ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا جَدِیْدًا ﴿۹۸﴾ اَوَلَمْ یَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ

जाएंगे तब फिर नए सिरे से पैदा किए जाएंगे। क्या उन्हों ने देखा नहीं के अल्लाह ने

الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ قَادِرٌ عَلٰٓی اَنْ یَّخْلُقَ

आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, वो क़ादिर है इस पर के उन के जैसे

مِثْلَهُمْ وَجَعَلَ لَهُمْ اَجَلًا لَّا رَيْبَ فِيْهِ ؕ فَاَبَى الظّٰلِمُوْنَ

पैदा करे और अल्लाह ने उन के लिए एक आखिरी मुद्दत मुक़र्रर कर दी है जिस में शक नहीं। फिर भी ज़ालिम लोग इन्कार

اِلَّا كُفُوْرًا ﴿٩٩﴾ قُلْ لَّوْ اَنْتُمْ تَمْلِكُوْنَ خَزَآئِنَ رَحْمَةِ رَبِّيْٓ

करते हैं मगर कुफ्र में (बढ़ते हैं)। आप फरमा दीजिए के अगर तुम मालिक होते मेरे रब की रहमत के खज़ानों के

اِذًا لَّاَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْاِنْفَاقِ ؕ وَكَانَ الْاِنْسَانُ قَتُوْرًا ﴿١٠٠﴾ ع

तब तो तुम खर्च हो जाने के खौफ से रोक लेते। और इन्सान बड़ा बखील वाकेअ हुवा है।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى تِسْعَ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ فَسْـَٔلْ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ

यक़ीनन हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को नौ मोअजिज़ात दिए, फिर आप बनी इस्राईल से पूछिए जब

اِذْ جَآءَهُمْ فَقَالَ لَهٗ فِرْعَوْنُ اِنِّيْ لَاَظُنُّكَ يٰمُوْسٰى

मूसा (अलैहिस्सलाम) उन के पास आए तो फ़िरऔन ने मूसा (अलैहिस्सलाम) से कहा के यक़ीनन मैं तुम्हें ऐ मूसा! जादू किया

مَسْحُوْرًا ﴿١٠١﴾ قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَ مَآ اَنْزَلَ هٰٓؤُلَآءِ اِلَّا رَبُّ

हुवा गुमान करता हूँ। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के यक़ीनन तू जानता है के उन को नहीं उतारा मगर आसमानों और

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ بَصَآئِرَ ۚ وَاِنِّيْ لَاَظُنُّكَ يٰفِرْعَوْنُ

ज़मीन के रब ने आँखें खोल देने वाले (दलाइल) बना कर। और यक़ीनन मैं तुझे ऐ फिरऔन! हलाक होने वाला

مَثْبُوْرًا ﴿١٠٢﴾ فَاَرَادَ اَنْ يَّسْتَفِزَّهُمْ مِّنَ الْاَرْضِ فَاَغْرَقْنٰهُ

गुमान कर रहा हूँ। फिर फिरऔन ने चाहा के उन को उस मुल्क से परेशान कर के निकाल दे, तो हम ने फ़िरऔन और

وَمَنْ مَّعَهٗ جَمِيْعًا ﴿١٠٣﴾ وَّقُلْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ لِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ

उन तमाम को जो फ़िरऔन के साथ थे सब को ग़र्क़ कर दिया। और हम ने उस के बाद बनी इस्राईल से कहा के

اسْكُنُوا الْاَرْضَ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ الْاٰخِرَةِ جِئْنَا بِكُمْ لَفِيْفًا ؕ ﴿١٠٤﴾

इस मुल्क में रहो, फिर जब आखिरत का वादा आएगा तो हम तुम्हें समेट कर ले आएंगे।

وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْنٰهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ ؕ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا

और हक़ ही के साथ हम ने उस को उतारा और हक़ ही के साथ वो उतरा। और हम ने आप को रसूल बना कर नहीं भेजा मगर बशारत

وَّنَذِيْرًا ﴿١٠٥﴾ وَقُرْاٰنًا فَرَقْنٰهُ لِتَقْرَاَهٗ عَلَى النَّاسِ وقف لازم

देने वाला और डराने वाला बना कर। और कुरआन को हम ने अलग अलग कर के उतारा ताके आप इन्सानों के सामने उस को

عَلٰى مُكْثٍ وَّنَزَّلْنٰهُ تَنْزِيْلًا ﴿١٠٦﴾ قُلْ اٰمِنُوْا بِهٖٓ اَوْ لَا تُؤْمِنُوْا ؕ

पढ़ें ठेहेर ठेहेर कर और हम ने उस को थोड़ा थोड़ा उतारा है। आप फ़रमा दीजिए के तुम उस पर ईमान लाओ या ईमान न लाओ।

اِنَّ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهٖٓ اِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ

यक़ीनन वो जिन्हें इल्म दिया गया इस से पेहले, उन पर तो जब ये तिलावत किया जाता है

يَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ سُجَّدًا ﴿١٠٧﴾ وَّيَقُوْلُوْنَ سُبْحٰنَ رَبِّنَآ

तो वो अपनी ठोड़ियों के बल सजदे में गिर जाते हैं। और केहते हैं के हमारा रब पाक है,

اِنْ كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُوْلًا ﴿١٠٨﴾ وَيَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ

यक़ीनन हमारे रब का वादा अलबत्ता पूरा हो कर रहा। और वो ठोड़ियों के बल गिर जाते हैं

يَبْكُوْنَ وَيَزِيْدُهُمْ خُشُوْعًا ﴿١٠٩﴾ السجدة قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ ۴

रोते हुए और ये उन के ख़ुशूअ को और ज़्यादा करता है। आप फ़रमा दीजिए के तुम अल्लाह को पुकारो

اَوِ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ ؕ اَيًّا مَّا تَدْعُوْا فَلَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۚ

या रहमान को पुकारो। जौनसे को भी तुम पुकारो तो उस के लिए सब से अच्छे नाम हैं।

وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ

और आप अपनी नमाज़ में न ज़्यादा ज़ोर से पढ़िए और न बिल्कुल आहिस्ता पढ़िए और उस के दरमियान

ذٰلِكَ سَبِيْلًا ﴿١١٠﴾ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَمْ يَتَّخِذْ

रास्ता इख़तियार कीजिए। और आप फरमा दीजिए के तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जो न

وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ

औलाद रखता है और न उस का कोई शरीक है सलतनत में और न कोई

لَّهٗ وَلِيٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا ﴿١١١﴾ ع ۱۲ ۱۲

उस का कमज़ोरी की वजह से मददगार है और उसी की आप ख़ूब बड़ाई बयान कीजिए।

سُوْرَةُ الْكَهْفِ مَكِّيَّةٌ (٦٩) (١٨)

اٰيَاتُهَا ١١٠ رُكُوْعَاتُهَا ١٢

और १२ रूकूअ हैं सूरह कहफ मक्का में नाज़िल हुई उस में ११० आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ عَلٰى عَبْدِهِ الْكِتٰبَ

तमाम तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने अपने बन्दे पर ये किताब उतारी

وَلَمْ يَجْعَلْ لَّهٗ عِوَجًا ﴿١﴾ قَيِّمًا لِّيُنْذِرَ بَاْسًا شَدِيْدًا مِّنْ

और उस में कोई कजी नहीं रखी। (इस किताब को उतारा) तसदीक़ करने वाला बना कर ताके डराए सख़्त अज़ाब

لَّدُنْهُ وَيُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ

से अल्लाह की तरफ से और ईमान वालों को बशारत दे जो आमाले सालिहा करते हैं

اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا حَسَنًا ۙ﴿٢﴾ مَّاكِثِيْنَ فِيْهِ اَبَدًا ۙ﴿٣﴾

इस बात की के उन के लिए अच्छा सवाब है। जिस में वो हमेशा ठेहरेंगे।

وَّيُنْذِرَ الَّذِيْنَ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ۗ﴿٤﴾ مَا لَهُمْ بِهٖ

और डराए उन को जो यूँ केहते हैं के अल्लाह ने औलाद बनाई है। उन के पास और उन

مِنْ عِلْمٍ وَّلَا لِاٰبَآئِهِمْ ؕ كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ

के बाप दादा के पास उस पर कोई दलील नहीं। बहोत बड़ा कलिमा है जो उन के

مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ؕ اِنْ يَّقُوْلُوْنَ اِلَّا كَذِبًا ﴿٥﴾ فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ

मुंह से निकलता है। वो सिर्फ़ झूठ केहते हैं। फिर शायद आप अपनी जान

نَّفْسَكَ عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ اِنْ لَّمْ يُؤْمِنُوْا بِهٰذَا الْحَدِيْثِ

निकाल देंगे उन के पीछे अफ़सोस के मारे अगर वो इस क़ुरआन पर ईमान नहीं

اَسَفًا ﴿٦﴾ اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْاَرْضِ زِيْنَةً لَّهَا

लाते। यक़ीनन हम ने उसे जो ज़मीन के ऊपर है ज़मीन की ज़ीनत बनाया है

لِنَبْلُوَهُمْ اَيُّهُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ﴿٧﴾ وَاِنَّا لَجٰعِلُوْنَ

ताके हम उन्हें आज़माएं के कौन उन में से अच्छा अमल करने वाला है। और यक़ीनन हम उस को जो ज़मीन के

مَا عَلَيْهَا صَعِيْدًا جُرُزًا ﴿٨﴾ اَمْ حَسِبْتَ اَنَّ اَصْحٰبَ الْكَهْفِ

ऊपर है साफ चटयल मैदान बना कर छोड़ने वाले हैं। क्या आप ने गुमान किया के असहाबे कहफ (ग़ार वाले)

وَالرَّقِيْمِ ۙ كَانُوْا مِنْ اٰيٰتِنَا عَجَبًا ﴿٩﴾ اِذْ اَوَى الْفِتْيَةُ

और तख़्ती वाले वो हमारी अजीब निशानियों में से थे? जब के चन्द नौजवानों ने

اِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوْا رَبَّنَآ اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ

ग़ार में पनाह ली, और उन्हों ने कहा के ऐ हमारे रब! तू हमें अपनी तरफ़ से रहमत

رَحْمَةً وَّ هَيِّئْ لَنَا مِنْ اَمْرِنَا رَشَدًا ﴿١٠﴾ فَضَرَبْنَا

अता कर और हमारे लिए हमारे मुआमले में रहनुमाई मुहय्या फ़रमा। फिर हम

عَلٰٓى اٰذَانِهِمْ فِى الْكَهْفِ سِنِيْنَ عَدَدًا ۙ﴿١١﴾ ثُمَّ

ने उन के कानों पर उस ग़ार में चन्द साल तक थपकी दी। फिर हम ने उन को

بَعَثْنٰهُمْ لِنَعْلَمَ اَیُّ الْحِزْبَیْنِ اَحْصٰی لِمَا لَبِثُوْٓا

नींद से उठाया ताके हम मालूम करें के कौन सी जमाअत अपने ठेहेरने की मुद्दत को ज़्यादा याद रखने

اَمَدًا ﴿١٢﴾ نَحْنُ نَقُصُّ عَلَیْكَ نَبَاَهُمْ بِالْحَقِّ ؕ اِنَّهُمْ ع ١٢

वाली है? हम आप के सामने उन का क़िस्सा तहक़ीक़ से बयान करते हैं। यक़ीनन वो चन्द

فِتْیَةٌ اٰمَنُوْا بِرَبِّهِمْ وَزِدْنٰهُمْ هُدًی ﴿١٣﴾ وَّ رَبَطْنَا

नौजवान थे जो अपने रब पर ईमान लाए थे और हम ने उन को ज़्यादा हिदायत दी थी। और हम ने उन के

عَلٰی قُلُوْبِهِمْ اِذْ قَامُوْا فَقَالُوْا رَبُّنَا رَبُّ السَّمٰوٰتِ

दिलों को मज़बूत कर दिया था जब वो खड़े हुए और उन्हों ने कहा के हमारा रब आसमानों और ज़मीन का

وَالْاَرْضِ لَنْ نَّدْعُوَا۟ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِلٰهًا لَّقَدْ قُلْنَاۤ

रब है, हम उस के अलावा किसी माबूद को हरगिज़ नहीं पुकारेंगे, यक़ीनन तब तो हम ने

اِذًا شَطَطًا ﴿١٤﴾ هٰۤؤُلَآءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ

हक़ से दूर वाली बात कही। ये हमारी क़ौम है जिन्हों ने अल्लाह के अलावा कई माबूद बना

اٰلِهَةً ؕ لَوْلَا یَاْتُوْنَ عَلَیْهِمْ بِسُلْطٰنٍۢ بَیِّنٍ ؕ فَمَنْ

लिए हैं। उस पर कोई रोशन दलील क्यूं नहीं लाते? फिर उस से

اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰی عَلَی اللّٰهِ كَذِبًا ﴿١٥﴾

ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ घड़े।

وَاِذِ اعْتَزَلْتُمُوْهُمْ وَمَا یَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ فَاْوٗۤا اِلَی الْكَهْفِ

और जब तुम उन से और अल्लाह के अलावा उन के माबूदों से अलग हो गए हो तो तुम ग़ार में पनाह लो,

یَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَ یُهَیِّئْ لَكُمْ

तुम्हारे लिए तुम्हारा रब अपनी रहमत निछावर करेगा और तुम्हारे लिए तुम्हारे मुआमले में

مِّنْ اَمْرِكُمْ مِّرْفَقًا ﴿١٦﴾ وَتَرَی الشَّمْسَ اِذَا طَلَعَتْ تَّزٰوَرُ

आसानी मुहय्या करेगा। और तू सूरज को देखेगा, जब वो तुलूअ होता है तो उन

عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْیَمِیْنِ وَاِذَا غَرَبَتْ تَّقْرِضُهُمْ

के ग़ार से दाईं तरफ़ को हटता है और जब ग़ुरूब होता है तो उन को बाईं तरफ़

ذَاتَ الشِّمَالِ وَهُمْ فِیْ فَجْوَةٍ مِّنْهُ ؕ ذٰلِكَ مِنْ

काट देता है हालांके वो उस के खुले मैदान में हैं। ये अल्लाह की

اٰیٰتِ اللّٰهِ ؕ مَنْ یَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ یُّضْلِلْ

आयात में से है। जिस को अल्लाह हिदायत दे वो हिदायतयाफता है। और जिसे अल्लाह गुमराह कर दे तो

فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ وَلِیًّا مُّرْشِدًا ﴿۱۷﴾ وَ تَحْسَبُهُمْ اَیْقَاظًا

आप उस के लिए कोई दोस्त रास्ता बताने वाला हरगिज़ नहीं पाओगे। और आप उन्हें बेदार गुमान करेंगे

وَّهُمْ رُقُوْدٌ ۖۗ وَّنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْیَمِیْنِ وَ ذَاتَ الشِّمَالِ ۖۗ

हालांके वो सोए हुए हैं। और हम उन्हें दाईं और बाईं तरफ़ उलट पलट करते हैं।

وَ كَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَیْهِ بِالْوَصِیْدِ ؕ لَوِ اطَّلَعْتَ

और उन का कुत्ता अपनी बाहें चौखट पर फैलाए हुए है। अगर आप उन की

عَلَیْهِمْ لَوَلَّیْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا وَّلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ﴿۱۸﴾

तरफ़ झाकें तो उन से पीठ फेर कर भागें और आप उन की तरफ से मरऊब हो जाएं।

وَكَذٰلِكَ بَعَثْنٰهُمْ لِیَتَسَآءَلُوْا بَیْنَهُمْ ؕ قَالَ قَآئِلٌ

और इसी तरह हम ने उन को जगा दिया ताके वो आपस में सवाल करें। उन में से एक केहने वाले

مِّنْهُمْ كَمْ لَبِثْتُمْ ؕ قَالُوْا لَبِثْنَا یَوْمًا اَوْ بَعْضَ یَوْمٍ ؕ

ने कहा के तुम कितना ठेहरे रहे? तो उन्हों ने कहा के हम एक दिन या एक दिन से भी कम ठेहरे रहे।

قَالُوْا رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ ؕ فَابْعَثُوْٓا اَحَدَكُمْ

उन्हों ने कहा के तुम्हारा रब तुम्हारे ठेहरने की मुद्दत खूब जानता है। अब तुम अपने में से किसी एक को

بِوَرِقِكُمْ هٰذِهٖٓ اِلَى الْمَدِیْنَةِ فَلْیَنْظُرْ اَیُّهَآ اَزْكٰى

तुम्हारा चाँदी का ये दिरहम दे कर शेहर की तरफ भेजो, फिर उसे चाहिए के वो देखे के कौन सा खाना

طَعَامًا فَلْیَاْتِكُمْ بِرِزْقٍ مِّنْهُ وَلْیَتَلَطَّفْ

ज़्यादा पाकीज़ा है, फिर वो तुम्हारे पास उस में से खाना लाए और उसे चाहिए के वो नर्म बात करे

وَلَا یُشْعِرَنَّ بِكُمْ اَحَدًا ﴿۱۹﴾ اِنَّهُمْ اِنْ یَّظْهَرُوْا عَلَیْكُمْ

और किसी को तुम्हारा पता न बतलाए। इस लिए के वो अगर तुम पर मुत्तलेअ हो जाएंगे

یَرْجُمُوْكُمْ اَوْ یُعِیْدُوْكُمْ فِیْ مِلَّتِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوْٓا

तो तुम्हें रज्म कर देंगे या तुम्हें अपने मज़हब में लौटा देंगे और तुम उस वक्त कभी भी हरगिज़

اِذًا اَبَدًا ﴿۲۰﴾ وَكَذٰلِكَ اَعْثَرْنَا عَلَیْهِمْ لِیَعْلَمُوْٓا اَنَّ وَعْدَ

कामयाब न हो सकोगे। और इसी तरह हम ने उन पर मुत्तलेअ किया ताके वो जान लें के अल्लाह का

اللّٰهِ حَقٌّ وَّاَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيْهَا ۚ اِذْ يَتَنَازَعُوْنَ

वादा सच्चा है और ये के क़यामत में कोई शक नहीं। जब के वो आपस में झगड़ रहे थे उन (असहाबे

بَيْنَهُمْ اَمْرَهُمْ فَقَالُوا ابْنُوْا عَلَيْهِمْ بُنْيَانًا ؕ رَبُّهُمْ

कहफ़) के मुआमले में, तो बाज़ ने कहा के उन पर इमारत बना लो। उन का रब उन्हें खूब

اَعْلَمُ بِهِمْ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ غَلَبُوْا عَلٰٓى اَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ

जानता है। उन लोगों ने कहा जो उन के मुआमले में ज़्यादा बाइखतियार थे के हम ज़रूर उन के ऊपर

عَلَيْهِمْ مَّسْجِدًا ﴿٢١﴾ سَيَقُوْلُوْنَ ثَلٰثَةٌ رَّابِعُهُمْ

मस्जिद बनाएंगे। अब वो कहेंगे के असहाबे कहफ़ तीन थे, उन में चौथा

كَلْبُهُمْ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ رَجْمًا ۢ

उन का कुत्ता था। और कहेंगे के पाँच थे, उन में छठ्ठा उन का कुत्ता था, बेदेखे पथ्थर

بِالْغَيْبِ ۚ وَ يَقُوْلُوْنَ سَبْعَةٌ وَّثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ ؕ

फेंकते हुए। और वो कहेंगे के सात थे, और आठवां उन का कुत्ता था।

قُلْ رَّبِّيْٓ اَعْلَمُ بِعِدَّتِهِمْ مَّا يَعْلَمُهُمْ اِلَّا قَلِيْلٌ ۬ؕ

आप फरमा दीजिए के मेरा रब उन की तादाद खूब जानता है, थोड़े लोगों के सिवा किसी को उन की तादाद का इल्म नहीं।

فَلَا تُمَارِ فِيْهِمْ اِلَّا مِرَآءً ظَاهِرًا ۪ وَّلَا تَسْتَفْتِ فِيْهِمْ

इस लिए आप उन के बारे में सिवाए सरसरी बहस के ज़्यादा बहस न कीजिए। और आप उन के बारे

مِّنْهُمْ اَحَدًا ﴿٢٢﴾ وَلَا تَقُوْلَنَّ لِشَايْءٍ اِنِّيْ فَاعِلٌ ع ١٥

में उन में से किसी से न पूछिए। और किसी चीज़ के मुतअल्लिक़ यूँ न कहिए के मैं उस को

ذٰلِكَ غَدًا ﴿٢٣﴾ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ز وَاذْكُرْ رَّبَّكَ

कल करूँगा। मगर ये के अल्लाह चाहे (तो करूंगा)। और अपने रब को याद कीजिए

اِذَا نَسِيْتَ وَقُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّهْدِيَنِ رَبِّيْ لِاَقْرَبَ

जब आप भूल जाएं और आप यूँ कहिए के हो सकता है के मेरा रब इस से अक़रब

مِنْ هٰذَا رَشَدًا ﴿٢٤﴾ وَلَبِثُوْا فِيْ كَهْفِهِمْ ثَلٰثَ مِائَةٍ

रूश्द व हिदायत की राह पर मुझे लगा दे। और वो अपने ग़ार में तीन सौ बरस

سِنِيْنَ وَازْدَادُوْا تِسْعًا ﴿٢٥﴾ قُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا

और मज़ीद नौ साल ठेहरे। आप फरमा दीजिए के अल्लाह उन के ठेहेरने की मुद्दत खूब

لَبِثُوْا ۚ لَهٗ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اَبْصِرْ بِهٖ

जानता है। उस के पास आसमानों और ज़मीन का ग़ैब है। क्या अजब उस का देखना

وَاَسْمِعْ ؕ مَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ ز وَّلَا يُشْرِكُ

और सुनना है। बन्दों के लिए अल्लाह के सिवा कोई मददगार नहीं। और वो अपनी हुकूमत

فِيْ حُكْمِهٖۤ اَحَدًا ﴿۲۶﴾ وَاتْلُ مَاۤ اُوْحِيَ اِلَيْكَ

में किसी को शरीक नहीं करता। और आप तिलावत कीजिए उसे जो आप की तरफ आप के रब की किताब में

مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ ۚ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ وَلَنْ تَجِدَ

से वही किया गया है। उस के कलिमात को कोई बदल नहीं सकता। और आप उस के अलावा कोई पनाह की

مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ﴿۲۷﴾ وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ

जगह हरगिज़ नहीं पाओगे। और आप अपने को रोके रखिए उन के साथ जो

يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ

अपने रब को सुबह व शाम पुकारते हैं, उस की

وَجْهَهٗ وَلَا تَعْدُ عَيْنٰكَ عَنْهُمْ ۚ تُرِيْدُ زِيْنَةَ الْحَيٰوةِ

रज़ा के तालिब हैं और अपनी निगाह उन से न हटाइए। दुन्यवी ज़िन्दगी की ज़ीनत आप चाहते

الدُّنْيَا ۚ وَلَا تُطِعْ مَنْ اَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا

हैं? और उस शख्स का केहना न मानिए जिस का दिल हम ने अपनी याद से ग़ाफिल कर रखा है और वो

الثلثة

وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ وَكَانَ اَمْرُهٗ فُرُطًا ﴿۲۸﴾ وَقُلِ الْحَقُّ

अपनी ख्वाहिश के पीछे पड़ गया है और उस का मुआमला हद से आगे बढ़ गया है। और आप यूँ कहिए के हक़

مِنْ رَّبِّكُمْ ۗ فَمَنْ شَآءَ فَلْيُؤْمِنْ وَّمَنْ شَآءَ فَلْيَكْفُرْ ۙ

तुम्हारे रब की तरफ से है। तो जो चाहे वो ईमान लाए और जो चाहे वो कुफ्र करे।

اِنَّاۤ اَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ نَارًا ۙ اَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ؕ

यक़ीनन हम ने ज़ालिमों के लिए आग तय्यार कर रखी है, आग की क़नातें उन्हें घेरे हुए हैं।

وَاِنْ يَّسْتَغِيْثُوْا يُغَاثُوْا بِمَآءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوْهَ ؕ

और अगर वो मदद मांगेंगे तो उन की मदद की जाएगी ऐसे पानी से जो पिघले हुए तांबे की तरह होगा, जो

بِئْسَ الشَّرَابُ ؕ وَسَآءَتْ مُرْتَفَقًا ﴿۲۹﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ

चेहरों को भून देगा। कितनी बुरी शराब। और (जहन्नम) कितनी बुरी जगह है। यक़ीनन जो

اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ مَنْ اَحْسَنَ

ईमान लाए और जो नेक काम करते रहे, यक़ीनन उस का अज्र हम ज़ायेअ नहीं करेंगे जिस ने

عَمَلًا ۝٣٠ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ

अच्छा अमल किया। उन के लिए जन्नाते अद्न होंगी, जिन के नीचे से

مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ

नेहरें बेहती होंगी, उन्हें उन में कंगन पेहनाए जाएंगे सौने के

وَّيَلْبَسُوْنَ ثِيَابًا خُضْرًا مِّنْ سُنْدُسٍ وَّاِسْتَبْرَقٍ

और वो सब्ज़ लिबास पेहनेंगे बारीक रेशम के और मोटे रेशम के,

مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ ؕ نِعْمَ الثَّوَابُ ؕ وَحَسُنَتْ

उन में वो तख़्तों पर टेक लगाए होंगे। कितना अच्छा बदला है। और कितनी अच्छी

مُرْتَفَقًا ۝٣١ وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا رَّجُلَيْنِ جَعَلْنَا ع ١٦

राहत की जगह है। और आप उन के सामने मिसाल बयान कीजिए दो आदमियों की के उन में से एक

لِاَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ اَعْنَابٍ وَّحَفَفْنٰهُمَا بِنَخْلٍ

के लिए हम ने अंगूर के दो बाग़ बनाए और हम ने उन दोनों बाग़ों को चारों तरफ से घेर लिया खजूर के दरख़्तों से

وَّجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زَرْعًا ۝٣٢ كِلْتَا الْجَنَّتَيْنِ اٰتَتْ

और उन दोनों के दरमियान हम ने खेत बना दिए। ये दोनों बाग़ अपने फल

اُكُلَهَا وَلَمْ تَظْلِمْ مِّنْهُ شَيْـًٔا ۙ وَّفَجَّرْنَا خِلٰلَهُمَا

देते थे और उस में से कुछ कम नहीं करते थे। और हम ने उन दोनों बाग़ों के दरमियान नहर जारी

نَهَرًا ۝٣٣ وَّكَانَ لَهٗ ثَمَرٌ ۚ فَقَالَ لِصَاحِبِهٖ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗٓ

कर दी थी। और बराबर फल उसे मिल रहे थे। तो वो अपने साथी से केहने लगा उस से गुफ़तगू के दौरान

اَنَا اَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَّاَعَزُّ نَفَرًا ۝٣٤ وَدَخَلَ جَنَّتَهٗ

के मैं तुझ से ज़्यादा माल वाला हूँ और तुझ से ज़्यादा भारी नफरी वाला हूँ। और वो अपने बाग़ में दाख़िल हुवा

وَهُوَ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ قَالَ مَآ اَظُنُّ اَنْ تَبِيْدَ هٰذِهٖٓ

इस हाल में के वो अपनी जान पर ज़ुल्म करने वाला था। वो केहने लगा के मेरा ये गुमान नहीं के ये बाग

اَبَدًا ۝٣٥ وَّمَآ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً ۙ وَّلَئِنْ رُّدِدْتُّ

कभी बरबाद होगा। और मैं क़यामत के आने का अक़ीदा नहीं रखता, और अगर मैं मेरे

اِلٰى رَبِّىْ لَاَجِدَنَّ خَيْرًا مِّنْهَا مُنْقَلَبًا ﴿٣٦﴾ قَالَ

रब की तरफ लौटा भी दिया गया तो मैं उस से बेहतर जगह पाऊँगा। उस के

لَهٗ صَاحِبُهٗ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗٓ اَكَفَرْتَ بِالَّذِىْ

साथी ने उसे कहा गुफ्तगू के दौरान, क्या तू कुफ्र करता है उस ज़ात के साथ जिस ने

خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ سَوّٰىكَ

तुझे मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फे से, फिर तुझे पूरा इन्सान

رَجُلًا ﴿٣٧﴾ لٰكِنَّا۠ هُوَ اللّٰهُ رَبِّىْ وَلَآ اُشْرِكُ بِرَبِّىْٓ

बनाया? लेकिन वही अल्लाह मेरा रब है और मैं अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं

اَحَدًا ﴿٣٨﴾ وَلَوْلَآ اِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ

ठेहराता। और जब तू अपने बाग़ में दाखिल हुवा तो तू ने यूँ क्यूं नहीं कहा "مَا شَآءَ اللّٰهُ"

مَا شَآءَ اللّٰهُ ۙ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ ۚ اِنْ تَرَنِ اَنَا اَقَلَّ

"لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ" (जो अल्लाह ने चाहा (वही होगा) ताक़त नहीं मगर अल्लाह की तरफ़ से) अगर तू मुझे देख

مِنْكَ مَالًا وَّ وَلَدًا ﴿٣٩﴾ فَعَسٰى رَبِّىْٓ اَنْ يُّؤْتِيَنِ

रहा है के मैं तुझ से कम माल और कम औलाद वाला हूँ। तो हो सकता है के मेरा रब मुझे तेरे बाग़

خَيْرًا مِّنْ جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا

से बेहतर दे दे और इस बाग़ पर आसमान से अज़ाब

مِّنَ السَّمَآءِ فَتُصْبِحَ صَعِيْدًا زَلَقًا ﴿٤٠﴾ اَوْ يُصْبِحَ مَآؤُهَا

भेज दे, और ये फिसलन वाला मैदान बन जाए। या उस का पानी ज़मीन में नीचे

غَوْرًا فَلَنْ تَسْتَطِيْعَ لَهٗ طَلَبًا ﴿٤١﴾ وَاُحِيْطَ بِثَمَرِهٖ

चला जाए, किसी तरह तू उसे तलाश भी न कर सकेगा। और उस के फलों पर आफत आ गई,

فَاَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلٰى مَآ اَنْفَقَ فِيْهَا وَهِىَ

और वो अपने दोनों हाथ मलता रेह गया उस माल पर जो उस ने बाग़ में खर्च किया था और वो बाग़

خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا وَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِىْ لَمْ اُشْرِكْ

गिरा पड़ा हुवा था उस के छप्परों पर, इधर ये केह रहा था के काश मैं अपने रब के साथ किसी को

بِرَبِّىْٓ اَحَدًا ﴿٤٢﴾ وَلَمْ تَكُنْ لَّهٗ فِئَةٌ يَّنْصُرُوْنَهٗ

शरीक न ठेहराता। और उस की कोई जमाअत भी न हुई जो उस की नुसरत करती

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَمَا كَانَ مُنْتَصِرًا ﴿٤٣﴾ هُنَالِكَ

अल्लाह के अलावा और वो खुद भी अपनी मदद न कर सका। वहाँ पर

الْوَلَايَةُ لِلّٰهِ الْحَقِّ ؕ هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَّ خَيْرٌ عُقْبًا ﴿٤٤﴾ ع ٥

हक़ीक़ी हुकूमत अल्लाह ही के लिए है। वही बेहतर सवाब और बेहतर बदला देने वाला है।

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ

और आप उन के सामने दुन्यवी ज़िन्दगी की मिसाल बयान कीजिए उस पानी की तरह जो हम ने आसमान से

مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ فَاَصْبَحَ

उतारा, फिर उस के साथ ज़मीन का सब्ज़ा मिल गया, फिर वो कूड़ा करकट

هَشِيْمًا تَذْرُوْهُ الرِّيٰحُ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ

हो जाता है जिस को हवाएं उड़ाती हैं। और अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत

مُّقْتَدِرًا ﴿٤٥﴾ اَلْمَالُ وَالْبَنُوْنَ زِيْنَةُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ

वाला है। माल और बेटे दुन्यवी ज़िन्दगी की ज़ीनत हैं।

وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ

और बाक़ी रेहने वाली नेकियाँ बेहतर हैं तेरे रब के यहाँ सवाब के ऐतेबार से और उम्मीद के ऐतेबार से

اَمَلًا ﴿٤٦﴾ وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْاَرْضَ بَارِزَةً ۙ

बेहतर हैं। और जिस दिन हम पहाड़ों को चलाएंगे और तू ज़मीन हमवार देखेगा।

وَّحَشَرْنٰهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ اَحَدًا ﴿٤٧﴾ وَعُرِضُوْا

और हम उन को इकट्ठा करेंगे, फिर हम उन में से किसी एक को भी नहीं छोड़ेंगे। और वो तेरे रब के सामने

عَلٰى رَبِّكَ صَفًّا ؕ لَقَدْ جِئْتُمُوْنَا كَمَا خَلَقْنٰكُمْ

सफ बसफ पेश किए जाएंगे। (कहा जाएगा) के यक़ीनन तुम हमारे पास आ गए हो, जैसा हम ने तुम्हें

اَوَّلَ مَرَّةٍ ۭ بَلْ زَعَمْتُمْ اَلَّنْ نَّجْعَلَ لَكُمْ مَّوْعِدًا ﴿٤٨﴾

पेहली बार पैदा किया था। बल्के तुम ने तो ये गुमान किया था के हम तुम्हारे लिए वादे की जगह हरगिज़ नहीं बनाएंगे।

وَوُضِعَ الْكِتٰبُ فَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ

और नामाए आमाल रख दिया जाएगा, फिर मुजरिमों को आप देखेंगे के डरे हुए हैं

مِمَّا فِيْهِ وَ يَقُوْلُوْنَ يٰوَيْلَتَنَا مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ

उस से जो आमालनामे में है और वो कहेंगे के हाए हमारी हलाकत! इस नामाए आमाल को क्या हुवा

لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّآ اَحْصٰىهَا ۚ
के न सग़ीरा गुनाह को छोड़ा है, न कबीरा मगर सब को इस ने महफूज़ रखा है।

وَوَجَدُوْا مَا عَمِلُوْا حَاضِرًا ۗ وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ
और वो अपने आमाल सामने पाएंगे। और तेरा रब किसी पर ज़ुल्म नहीं

ع ٦ ٥ ١٨ اَحَدًا ۟﴿٤٩﴾ وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ
करता। और जब हम ने फरिश्तों से कहा के आदम को सज्दा करो

فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ۗ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ
तो सिवाए इबलीस के सब ने सज्दा किया। वो जिन्नात में से था, फिर उस ने नाफरमानी की

عَنْ اَمْرِ رَبِّهٖ ۗ اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَ ذُرِّيَّتَهٗٓ اَوْلِيَآءَ
अपने रब के हुक्म की। क्या फिर तुम मुझे छोड़ कर के उसे और उस की औलाद को

مِنْ دُوْنِيْ وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ ۗ بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ
दोस्त बनाते हो हालांके वो तुम्हारे दुशमन हैं? ज़ालिमों को बुरा

بَدَلًا ﴿٥٠﴾ مَآ اَشْهَدْتُّهُمْ خَلْقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
बदल मिला। मैं ने उन्हें मौजूद नहीं रखा आसमानों और ज़मीन के पैदा करने के वक्त

وَلَا خَلْقَ اَنْفُسِهِمْ ۠ وَمَا كُنْتُ مُتَّخِذَ الْمُضِلِّيْنَ
और न खुद उन के पैदा करने के वक्त। और मैं गुमराह करने वालों को मददगार नहीं

عَضُدًا ﴿٥١﴾ وَ يَوْمَ يَقُوْلُ نَادُوْا شُرَكَآءِيَ
बनाता। और जिस दिन वो कहेगा के तुम पुकारो मेरे उन शुरका को

الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ
जिन का तुम दावा करते थे, तो वो उन को पुकारेंगे, फिर वो उन की पुकार का जवाब नहीं देंगे

وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ مَّوْبِقًا ﴿٥٢﴾ وَرَاَ الْمُجْرِمُوْنَ النَّارَ
और हम उन के दरमियान में हलाकतगाह क़ाइम कर देंगे। और मुजरिम जहन्नम को देखेंगे,

فَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مُّوَاقِعُوْهَا وَلَمْ يَجِدُوْا عَنْهَا
फिर समझेंगे के वो उस में गिरने वाले हैं और उस से बचने की जगह नहीं

ع ٧ ٤ ١٩ مَصْرِفًا ۟﴿٥٣﴾ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِلنَّاسِ
पाएंगे। यक़ीनन हम ने इस कुरआन में इन्सानों के लिए फेर फेर कर

مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ؕ وَكَانَ الْاِنْسَانُ اَكْثَرَ شَیْءٍ

तमाम मिसालें बयान की हैं। और इन्सान सब चीज़ से ज़्यादा

جَدَلًا ﴿۵۴﴾ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ یُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَآءَهُمُ

झगड़ालू है। और इन्सानों को ईमान लाने से मानेअ नहीं हुई जब उन के पास

الْهُدٰی وَیَسْتَغْفِرُوْا رَبَّهُمْ اِلَّآ اَنْ تَاْتِیَهُمْ

हिदायत आई और अपने रब से मग़फिरत तलब करने से मानेअ नहीं हुई मगर ये बात के उन के पास

سُنَّةُ الْاَوَّلِیْنَ اَوْ یَاْتِیَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا ﴿۵۵﴾

पेहले लोगों का तरीक़ा आ जाए या उन के पास अज़ाब सामने आ पहोंचे।

وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِیْنَ اِلَّا مُبَشِّرِیْنَ وَ مُنْذِرِیْنَ ۚ

और हम रसूल नहीं भेजते मगर बशारत देने वाले और डराने वाले बना कर।

وَ یُجَادِلُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِالْبَاطِلِ لِیُدْحِضُوْا

और काफिर बातिल के ज़रिए झगड़ा करते हैं ताके उस के ज़रिए

بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوْٓا اٰیٰتِیْ وَمَآ اُنْذِرُوْا هُزُوًا ﴿۵۶﴾

हक़ को मिटा दें और वो मेरी आयतों को और उस को जिस से उन को डराया गया उसे मज़ाक़ बनाते हैं।

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰیٰتِ رَبِّهٖ فَاَعْرَضَ

और उस से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जिसे उस के रब की आयतों के ज़रिए नसीहत की जाए, फिर वो उस से

عَنْهَا وَنَسِیَ مَا قَدَّمَتْ یَدٰهُ ؕ اِنَّا جَعَلْنَا

ऐराज़ करे और भुला दे उसे जो उस के हाथों ने आगे भेजा है। यक़ीनन हम ने उन के दिलों पर

عَلٰی قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ یَّفْقَهُوْهُ وَفِیْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ؕ

परदे रख दिए हैं इस से के वो उसे समझें और उन के कानों में डाट रख दी है।

وَاِنْ تَدْعُهُمْ اِلَی الْهُدٰی فَلَنْ یَّهْتَدُوْٓا اِذًا اَبَدًا ﴿۵۷﴾

और अगर आप उन्हें हिदायत की तरफ बुलाएंगे तब भी हरगिज़ हिदायत नहीं पाएंगे कभी भी।

وَرَبُّكَ الْغَفُوْرُ ذُو الرَّحْمَةِ ؕ لَوْ یُؤَاخِذُهُمْ

और आप का रब बहोत ज़्यादा बख़्शने वाला, रहम वाला है। अगर अल्लाह उन को पकड़े उन के आमाल

بِمَا كَسَبُوْا لَعَجَّلَ لَهُمُ الْعَذَابَ ؕ بَلْ لَّهُمْ مَّوْعِدٌ

की वजह से तो उन के लिए अज़ाब जल्दी ले आए। बल्के उन के लिए मुक़र्ररा वक़्त है,

لَّنْ يَّجِدُوْا مِنْ دُوْنِهٖ مَوْىِٕلًا ﴿٥٨﴾ وَتِلْكَ الْقُرٰٓى

उस से पनाह की जगह वो हरगिज़ नहीं पाएंगे। और ये बस्तियाँ हैं

اَهْلَكْنٰهُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِمْ

जिन को हम ने हलाक किया जब उन्हों ने ज़ुल्म किया और हम ने उन की हलाकत का वक्त

ع مَّوْعِدًا ﴿٥٩﴾ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِفَتٰىهُ لَآ اَبْرَحُ

मुक़र्रर कर रखा था। और जब मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपने खादिम से फरमाया के मैं बराबर चलता रहूँगा

حَتّٰٓى اَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ اَوْ اَمْضِىَ حُقُبًا ﴿٦٠﴾ فَلَمَّا بَلَغَا

यहां तक के मैं पहोंच जाऊँ दो समन्दरों के बाहम मिलने की जगह पर या मैं मुद्दतों चलता रहूँगा। फिर जब वो

مَجْمَعَ بَيْنِهِمَا نَسِيَا حُوْتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ

दोनों पहोंचे दो समन्दरों के बाहम मिलने की जगह पर तो दोनों अपनी मछली भूल गए, फिर मछली ने समन्दर में

فِى الْبَحْرِ سَرَبًا ﴿٦١﴾ فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتٰىهُ اٰتِنَا

सुराख कर के अपना रास्ता बना लिया। फिर जब वो दोनों आगे निकल गए, तो मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपने खादिम

غَدَآءَنَا ز لَقَدْ لَقِيْنَا مِنْ سَفَرِنَا هٰذَا نَصَبًا ﴿٦٢﴾

से फ़रमाया के हमारे पास हमारा नाशता लाइए। यक़ीनन हमारे इस सफर से हमें थकावट पहोंची है।

قَالَ اَرَءَيْتَ اِذْ اَوَيْنَآ اِلَى الصَّخْرَةِ فَاِنِّىْ نَسِيْتُ

खादिम ने अर्ज़ किया क्या आप ने देखा जब हम ने पनाह ली चटान के पास तो मैं मछली

الْحُوْتَ ز وَمَآ اَنْسٰنِيْهُ اِلَّا الشَّيْطٰنُ اَنْ اَذْكُرَهٗ ج

भूल गया। और उस की याद शैतान ही ने मुझे भुला दी।

وَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ فِى الْبَحْرِ ۖ عَجَبًا ﴿٦٣﴾ قَالَ ذٰلِكَ

और मछली ने अपना रास्ता अजीब तरीक़े से समन्दर में बना लिया। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के ये वही

مَا كُنَّا نَبْغِ ۖ فَارْتَدَّا عَلٰٓى اٰثَارِهِمَا قَصَصًا ﴿٦٤﴾

तो है जिसे हम तलाश कर रहे थे। फिर वो दोनों अपने निशानाते क़दम को तलाश करते हुए वापस लौटे।

فَوَجَدَا عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَآ اٰتَيْنٰهُ رَحْمَةً

फिर दोनों ने हमारे बन्दों में से एक बन्दे को पाया जिसे हम ने हमारी तरफ से रहमत

مِّنْ عِنْدِنَا وَعَلَّمْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا ﴿٦٥﴾ قَالَ لَهٗ

अता की थी और जिसे हम ने हमारी तरफ़ से इल्म दिया था। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने उन से फरमाया

مُوْسٰى هَلْ اَتَّبِعُكَ عَلٰٓى اَنْ تُعَلِّمَنِ

क्या मैं आप के साथ चल सकता हूँ इस शर्त पर के आप मुझे सिखलाएं उन उलूम में से जो आप को

مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا ﴿٦٦﴾ قَالَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ

दिए गए हैं रूश्द (व हिदायत) के लिए। उन्हों (खिज़र) ने कहा यक़ीनन आप मेरे साथ रेह कर हरगिज़

مَعِيَ صَبْرًا ﴿٦٧﴾ وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلٰى مَا لَمْ تُحِطْ

सब्र नहीं कर सकोगे। और आप कैसे सब्र कर सकते हो उस पर जिस की मुकम्मल हक़ीक़त आप को

بِهٖ خُبْرًا ﴿٦٨﴾ قَالَ سَتَجِدُنِيْٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ صَابِرًا

मालूम नहीं? मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया अनक़रीब अगर अल्लाह ने चाहा तो आप मुझे सब्र करने वाला पाएंगे

وَّلَآ اَعْصِيْ لَكَ اَمْرًا ﴿٦٩﴾ قَالَ فَاِنِ اتَّبَعْتَنِيْ

और मैं आप की किसी मुआमले में नाफरमानी नहीं करूंगा। उन्हों (खिज़र) ने कहा फिर अगर आप मेरे साथ चलते हो

فَلَا تَسْـَٔلْنِيْ عَنْ شَيْءٍ حَتّٰٓى اُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ

तो मुझ से किसी चीज़ से मुतअल्लिक़ सवाल न कीजिए जब तक के मैं खुद आप के सामने उस को बयान

ذِكْرًا ﴿٧٠﴾ فَانْطَلَقَا ۫ حَتّٰٓى اِذَا رَكِبَا فِي السَّفِيْنَةِ ع ٩ ٢١

न करूं। फिर वो दोनों चले। यहां तक के जब वो सवार हुए कशती में तो उन्हों (खिज़र) ने

خَرَقَهَا ؕ قَالَ اَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ اَهْلَهَا ۚ

उस को फाड़ दिया। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया क्या तुम ने कशती फाड़ दी ताके कशती वालों को ग़र्क़ कर दो?

لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا اِمْرًا ﴿٧١﴾ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ اِنَّكَ

यक़ीनन आप ने बहोत बुरी हरकत की है। उन्हों (खिज़र) ने कहा क्या मैं ने कहा नहीं था के आप

لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿٧٢﴾ قَالَ لَا تُؤَاخِذْنِيْ

हरगिज़ मेरे साथ रेह कर सब्र नहीं कर सकोगे? मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के आप मेरा मुआखज़ा न कीजिए

بِمَا نَسِيْتُ وَلَا تُرْهِقْنِيْ مِنْ اَمْرِيْ عُسْرًا ﴿٧٣﴾

उस में जो मैं भूल गया और मेरे मुआमले में मुझे तंगी के क़रीब न कीजिए।

فَانْطَلَقَا ۫ حَتّٰٓى اِذَا لَقِيَا غُلٰمًا فَقَتَلَهٗ ۙ قَالَ اَقَتَلْتَ

फिर दोनों चले। यहां तक के जब दोनों एक लड़के से मिले तो उन्हों (खिज़र) ने उसे क़त्ल कर दिया। मूसा (अलैहिस्सलाम)

نَفْسًا زَكِيَّةًۢ بِغَيْرِ نَفْسٍ ؕ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا نُّكْرًا ﴿٧٤﴾

ने फरमाया क्या तुम ने एक पाकीज़ा जान को किसी नफ़्स के बग़ैर क़त्ल किया? यक़ीनन आप ने बहोत बुरी हरकत की।